"Knowledge Scholar"
An International Peer Reviewed E-Journal Of Multidisciplinary Research
Volume: 03, Issue: 01, Jan.-Feb. 2016 eISSN NO. 2394-5362
Impact Factor (IIFS) - 0.776

हिंदी लघुकथा के विविध आयम : सूर्यबाला के यामिनी कथा उपन्यास में स्त्री–विमर्श

प्रा. डॉ. प्रमोद पाटील

हिंदी विभाग प्रमुख
इन्द्रराज महाविद्यालय, सिल्लौड
ता. सिल्लौड, जि. औरंगाबाद

हिंदी साहित्य में लघु उपन्यसों की परंपरा में सूर्यबाला का योगदान बहुत महत्वपूर्ण है । सूर्यबाला ने नारी जीवन को केंद्र में रखकर अपने कथा साहित्य का सृजन किया है ।

सूर्यबाला के समग्र साहित्य के केंद्र में नारी ही रही है । वह भी मध्यमवर्गीय नारी । उन्होंने नारी की वेदना को नारी मन से परखा और तटस्थता से अभिव्यक्त किया है ।

सूर्यबाला के चर्चित उपन्यासों में 'मेरे संधिपत्र', 'अग्निपंखी', 'सुबह के इंतजार तक', 'यामिनी कथा', 'दीक्षांत', आदि है ।

सूर्यबाला का 'यामिनी कथा' चर्चित उपन्यास है । प्रस्तुत उपन्यास में यामिनी नामक नारी के संघर्ष को उजागर किया है । इस उपन्यास की नायिका अतीत और वर्तमान में अपने भुतपूर्व और वर्तमान पति के बीच स्मृति–दोलन करते भाव–झूले पर बैठी है । इर्द–गिर्द है दो बच्चे । वर्तमान का बेटा चुनचुन और मृत पति का किशोर वय बेटा पुतुल ।

http://www.ksijmr.com

प्रस्तुत उपन्यास की नायिका यामिनी है । उसका पति, विश्वास जहाज की नौकरी करता है । जिसके कारण उसके पास घर–परिवार के लिए ज्यादा समय नहीं होता । उनके आने जाने का कोई भरोसा नही होता । यामिनी अपने पति से बहुत स्नेह करती है । वह एक संवेदनशील नारी है । जिसके संवदेना ने उसके अनुभव को विलक्षण धार दी है । यामिनी अपने पति विश्वास से यदि कुछ अधिक चाहती है तो वह है प्यार, जो शरीर से उत्पन्न होता हुआ भी मानसिक और आत्मिक अधिक है परंतु उसके पूर्ण समर्पण से भी विश्वास उसे वह प्यार नही दे पाता, क्योंकि स्त्री को उसने विशेष सम्मान की दृष्टि से कभी देखा ही नही ।1

यामिनी अपने पति से जुडना चाहती है लेकिन विश्वास सच्चे मन से यामिनी से जुड नहीं पाता । जिसके कारण एक घुटन–सी महसूस होने लगती है ।

प्रस्तुत उपन्यास में लेखिका ने पति–पत्नी के मानसिक संघर्ष को उजागर किया है । यामिनी अपने पति से केवल प्रेम की कामना करती है लेकिन पति उसकी कामना को पूर्ण करने से असमर्थ है ।

कुछ दिनों के बाद यामिनी पुतुल को जन्म देती है । जिसके कारण उसका जीवन ही बदल जाता है । उसका पति जहाज से लौट आता है । वह बिमार होकर । वह यामिनी से कहता है, ''तुम्हारे पास लौटा भी तो कंगाल बनकर न ?'' अपने पति की बात सुनकर यामिनी का जैसे कलेला ही कॉप गया है ।''2

यामिनी के दुःख का स्वरूप अनेक स्तरीय है । आरंभ में विश्वास के साथ शरीर की सतह पर बिताए क्षणों की पीडा, पुतुल की प्राप्ती के साथ अपने संघर्ष को विजय का क्षणिक उल्लास और फिर विजय का आनंद न भोगने के लिए अतिशप्त यामिनी के आंतरिक और बाहय संघर्ष का हदय विदारक चित्र सूर्यबाला ने

महिन परंतु ठोस रंग रेखाओ से खीचा है । मोहभंग का यह दर्दनाक चित्र यामिनी की कराहों से पाठक को साक्षीदारी करने को बाहय करता है ।''

कुछ दिनों के बाद विश्वास का निधन होता है । जिसके कारण यामिनी तुटकर बिखर जाती है । यामिनी को विधवा–सी जिदंगी बितानी पडती है । परिवार भी आर्थिक स्थिति से परेशान हो जाता है क्योंकि विश्वास के इलाज के लिए पानी जैसा पैसा खर्च हुआ था ।

विश्वास के निधन के बाद यामिनी परिवार को जोडने का प्रयास करती है । उसी बीच निखिल से उसका परिचय होता है। वह एक दिन अचानक उसके सामने शादी का प्रस्ताव रखता है । निखिल की बाते सुनकर यामिनी को धक्का–सा लगता है । उसके बाद निखिल और यामिनी का रजिस्ट्रर मॅरेज होता है ।

कथाकार सूर्यबालाजी ने 'यामिनी कथा' नामक उपन्यास में यामिनी के जीवन से स्त्री के विभिन्न पहलुओं पर प्रकाश डाला है । किस तरह वह नाटक की पूरे परिवार के साथ अलग–अलग अभिनय करती है । क्योंकि वह पुनविवाहिता है पहले पति का बेटा साथ लेते हुए यामिनी दूसरे पति के साथ संसार करना कितना कठिन होता है इसका प्रत्यय हमें यामिनी के जीवन गाथा से आता है । एक ही समय में पति और पुत्र को प्यार करना उसके लिए असहय हो जाता है । मानों वह दोनों के प्यार में टूकडों में बॅटी हुई है ।3

यामिनी कहती है, ''मेरे लिए प्रौढा मॉ के तुरंत बाद नवेली पत्नी की भूमिका, यह सब स्वाभाविक कहॉ हो पाता ? थकान से त्रस्त होने लगती है । एक के पास होती और दूसरे का खटका आशंका व्यापती रहती । न प्रौढा मॉ रह पाती न मुग्धा पत्नी '' 4

प्रस्तुत उपन्यास में एक नया मोड आता है जब यामिनी अपने दूसरे बेटे चुनचुन को जन्म देती है । वह अब पुतुल और चुनचुन सें पूरी तरह से पिस–सी जाती है । उसे एक ही साथ पुतुल, चुनचुन और निखिल की ओर ध्यान देना पडता है । अब निखिल का धीरे–धीरे ध्यान पुतुल की और से हटने लगता है । जिसके कारण पुतुल भी खामोश हो जाता है । वह कभी अपनी मॉ को देखता है तो कभी चुनचुन को लेखिकाने इस प्रसंग में वालकों की मनोदशा का सशक्त वर्णन किया है ।

एक दिन यामिनी और निखिल में चुनचुन को लेकर झगडा भी होता है । निखिल कहता है, ''अब तो लगता है कि तुम सिर्फ आर्थिक और सामाजिक संरक्षण ही चाहती हो ।'' अपने पति की बाते उसके मन को चोट पहुॅचाती है । इस उपन्यास में लेखिकाने मनुष्य की स्वार्थ की भावना को उजागर किया है । पति को व्यवहार में बदलाव देखकर दुःखी होती है । वह अपने पति से कहती है, '' मैने सोचा था तुमने जिस तरह मुझे अपनाया उसी तरह पुतुल को भी अपनाकर उसे उसका अतीत भूल जाने में मदद करोगे ।''5

यामिनी की बाते सुनकर निखिल सहजता से कहता है, ''पत्नी के रूप में किसी स्त्री को स्वीकारना और बेटे के रूप में किसी लडके को दोनों दो अलग–अलग बातें है । पत्नी की जगह दूसरी स्त्री लेसकती है, बेटा तो सिर्फ अपना ही होता है।''

प्रस्तुत उपन्यास के अंत में पुतुल इम्तहानों के बाद भी प्रतियोगीता तथा प्रोफेशन तथा परीक्षाओं में व्यस्त हो गया । परिणाम यह हुआ कि पुतुल पास हो गया । बहुत अच्छे नही पर इतने अच्छे अंको से कि किसी प्रोफेशनल कॉलेज में प्रवेश मिल जाए । पुतुल की कडी मेहनत और लगन देखकर निखिल के स्वभाव में

भी अचानक थोडा परिवर्तन आता है । वह पुतुल से कहता है, ''जहॉ चाहे प्रवेश लेलो, पैसों की वजह से न हिच को ।''

उसके बाद पुतुल मर्चेट नेवी के इंजीनियरिंग का फॉम भरता है । उसे अपने पिता, विश्वास के व्यवसाय से प्रेम है । अपने बेटे की नेवी की बाते सुनकर यामिनी का मन बडा व्याकुल होता है । अंत में पुतुल के जाने की सारी तैयारी करने लगती है । पुतुल जाने से पहले अपने पिता का फोटो भी साथ रख लेता है ।

नेवी में जाने के एक दिन पुतुल फिर से एकदम खामोश हो गया पहले से भी कही ज्यादा । वह कोशिश करने लगा कि मॉ की ऑखो का सामना न हो । आखिरी दिन का इंतजाम निखिल ने किया । यामिनी ने सिर्फ खाने की चीजें पैक की । उस समय अवस्था उसकी अत्यंत बैचेन होने लगी । अनायास उसकी ऑखों में ऑसू बहने लगे । उसकी ऑखो का तारा, पुतुल अब हमेशा के लिए उससे बिछड रहा है ।

अब पुतुल के साथ सब स्टेशन पर जाते है फिर से खामोशी छा जाती है । ट्रेन आते समय निखिल ने सब सामान रख दिया । पुतुल को पहली यात्रा की सब हिदायते दी । उस समय पुतुल ने चुनचुन को गोद से लेकर चूम लिया, उसे दूलारा । उसके बाद निखिल को पप्पा कहकर पूकारा । उसके बातें सुनकर निखिल ने उसे अपनी बॉहो में समेट लिया ।

उपन्यास का अंत यामिनी को व्याकुल कर देता है । वह पूरी तरह टूटकर बिखरती है । वह हैरत भरी ऑखो से अपने बेटे को देख रही है । पुतुल विश्वास की ही प्रतिरूप है और वह अंततः अपने पिता का ही पेशा चुनकर मॉ–बाप से अलविदा कहता है ।

प्रस्तुत उपन्यास में लेखिका ने यामिनी के संघर्ष को चित्रित किया है ।

संतान और पति के बीच टूटती नारी की व्यथा सूर्यबाला ने बहुत खूबी से कागज पर उतारी है । ''उपन्यास के अंत में पुतुल का निखिल को पापा कहना, चुनचुन को दुलारना । यामिनी की वेदना को कम करनेवाला प्रसंग है । यामिनी दो पतियों और दोंनो बेटों के बावजूद एक नितांत एकाकी स्त्री है ।''6

'यामिनी कथा' में यामिनी के मानसिक भॅवर की अथाह गहराई, उसकी गंभीरता, उसमें सम्मिलित गोचर–अगोचर अनगिनत मानसिक संवेदना प्रवाहों का विशद रूपायन, आधुनिक नारी की जटिल तनाव और इसी बीच किसी तरह संतुलन के लिए सफल–असफल प्रयास करने में अभिव्यक्त जिजिविषा के शक्तिपूर्ण और कलात्मक दर्शन होते है ।

यामिनी की दारूग नियति से संघर्ष की गाथा का बडा ही करूण रूप लेखिका ने प्रत्यक्ष गोचर किया है । यामिनी के दुःख का स्वरूप अनेक स्तरीय है, उसके अंतरिक और बाहय संघर्ष का हदय विदारक चित्र लेखिका के महीन परंतु ठोस रंग रेखाओंसे खींचा है । मोहभंग का यह दर्दनाक चित्र यामिनी की कराहों से पाठक को साझेदारी करने को बाध्य करता है ।

निष्कर्ष :–

सूर्यबाला का प्रस्तुत उपन्यास स्त्री विमर्श की दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण है । यामिनी के द्वारा एक स्त्री के जीवन संघर्ष को इसमें रेखांकित किया है ।

संदर्भ :–

1. यामिनी कथा – सूर्यबाला – पृष्ठ क्र. 1
2. वही – पृष्ठ क्र. 61

http://www.ksijmr.com

3. सूर्यबाला के कथा साहित्य में युगबोध – डॉ वसंतकुमार माली – पृष्ठ क्र. 152
4. यामिनी कथा – सूर्यबाला – पृष्ठ क्र. 56
5. वही – पृष्ठ क्र. 59
6. सूर्यबाला के कथा साहित्य में युगबोध – डॉ वसंतकुमार माली – पृष्ठ क्र. 155

सहा. ग्रथ :.

1. सूर्यबाला के कथा साहित्य में युगबोध – डॉ वसंतकुमार माली

http://www.ksijmr.com